प्रतियोगिता दर्पण

अतिरिक्तांक

इस अंक में

5 सम्पादकीय
6 हिन्दी भाषा और नागरी लिपि
9 हिन्दी व्याकरण
14 शब्दकोश में शब्दों का क्रम
16 वर्ण, उच्चारण और वर्तनी
23 विराम चिह्नों का प्रयोग
24 पारिभाषिक शब्दावली
29 पर्यायवाची शब्द
45 विलोमार्थक शब्द
55 अनेकार्थक शब्द
56 समूहार्थक शब्द
58 अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द
71 तत्सम और तद्भव शब्द
74 उपसर्ग
78 प्रत्यय
82 संधि
91 समास
95 मुहावरे
104 लोकोक्तियाँ या कहावतें
111 वाक्य के भेद
113 वाक्य-शोधन
123 वाक्य में रिक्त स्थानों की पूर्ति
126 अनुच्छेद में रिक्त स्थानों की पूर्ति
128 पल्लवन (विशदीकरण)
129 पाठ बोधन
134 अपठित पद्यांश
135 रस
138 छन्द
140 अलंकार
144 हिन्दी साहित्य का इतिहास
154 साहित्यिक (पद्य) रचनाएँ और उनके रचयिता
160 हिन्दी (गद्य साहित्य) पुस्तकें और उनके लेखक
168 भारतीय काव्यशास्त्र और आलोचना
177 कार्यालयी-पत्र

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है.
–सम्पादक

प्रतियोगिता दर्पण के पाठकों से

दो शब्द

प्रिय पाठको,

वर्तमान में प्रतियोगिता परीक्षाओं में हिन्दी के निरन्तर बढ़ते हुए महत्व को दृष्टिगत रखते हुए प्रतियोगिता दर्पण के प्रस्तुत अतिरिक्तांक में परीक्षोपयोगी विशेष सामग्री प्रस्तुत की जा रही है. यह तथ्य निर्विवाद है कि सफलता के लिए सामान्य हिन्दी के प्रश्न-पत्र में परीक्षार्थी अपने विचारों को सुस्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सरल, प्रवाहमय एवं शुद्ध हिन्दी का उपयोग करें. इसी दिशा में परीक्षार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए विषय-विशेषज्ञों द्वारा इस अतिरिक्तांक को तैयार कराया गया है तथा इस तथ्य का विशेष ध्यान रखा गया है कि प्रश्न-पत्र के प्रत्येक अंग के अनुरूप मार्गदर्शन के लिए यथेष्ट अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाए.

अतिरिक्तांक की विषय-सूची पर दृष्टिपात करके ही आप इसकी विषय व्यापकता एवं उपादेयता से आश्वस्त हो जाएंगे. इसमें उपयुक्त शब्दों का चयन, मुहावरेदार एवं लोकोक्तिपूर्ण भाषा, समास, सन्धि-विग्रह, रस, छन्द, अलंकार, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भारतीय काव्यशास्त्र और आलोचना आदि सभी आवश्यक विषयों पर साधिकार सामग्री का प्रचुर मात्रा में संकलन किया गया है जो परीक्षा में आपके लिए साधारण सफलता ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि की सफलता के लिए प्रतिबद्ध है. इसमें विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के सामान्य हिन्दी के प्रश्नों को सम्मिलित करके इसकी उपयोगिता को और भी अधिक व्यापक कर दिया गया है.

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती (प्रत्यक्षे किं प्रमाणं). अतिरिक्तांक आपके हाथ में है. इसकी उपादेयता का निर्णय तो आप स्वयं कर सकते हैं.

आपकी चतुर्दिक सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

महेन्द्र जैन
(सम्पादक)